Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 5 | Issue : 2 | Feb 2019



BADALTE SAMAJIK PARIDRUSHYA ME SHIKSHAK PRASHIKSHAN PATHYAKRAM KI AWASHYAKTA

बदलते सामाजिक परिदृश्य में शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की आवश्यकता

Bharti Rawat [1] | Dr. Anoj Raj [2]

[1] Research Scholar, Department of Education, Himgiriji University, Dehradun.
[2] Ass. Prof. & HOD, Department of Education, Himgiriji University, Dehradun.

ABSTRACT

परिर्वतन प्रकृति का शाश्वत एवं अटल नियम है। आज के समय मे समाज के सभी घटकों जैसे मानव, समुदाय, विचार, संस्कृति, मूल्य आदि सभी मे तीव्र गति से बदलाव हो रहा है। जब समाज मे हर तरफ परिर्वतन परिलक्षित हो रहा है, तो ऐसे मे शिक्षा इन परिर्वतनों से अछूती कैसे रह सकती है ? किसी भी देश की उन्नत्ति व तरक्की उसके शिक्षा के स्तर पर निर्भर करती है, जो कि अन्ततः शिक्षकों की योग्यता पर आश्रित है। इसलिए शिक्षकों को समय–समय पर होने वाले इन परिर्वतनों का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। समाज मे शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए यह आवश्यक है कि शिक्षक–प्रशिक्षण प्रक्रिया मे बदलते सामाजिक परिदृश्य के अनुरूप पाठ्यक्रम को शामिल किया जाए। एनसीएफटीइ 2009 ने "शिक्षक शिक्षा और स्कूली शिक्षा के मध्य धनिष्ठ संबंध बताते हुए कहा है कि दानों की उन्नत्ति से शिक्षा उच्च स्तर तक पहुँच सकती है"। समाज मे एक तरफ भूमंडलीकरण और बाजारीकरण का प्रभाव एवं दबाव तीव्रता से बढ़ता जा रहा है जिसके लिए अत्यंत आवश्यक है कि वर्तमान मे शिक्षकों को भी नवीन ज्ञान और चुनौतियों से अवगत कराने के लिए शिक्षक–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम को अधिक व्यवस्थित किया जाए अन्यथा प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक अकुशल रहेंगे जिसके फलस्वरूप मांग और पूर्ति के मध्य बड़ा अन्तर हो जाएगा। शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम इस प्रकार से तैयार किया जाए जो बदलाव की चुनौतियों को स्वीकार करने मे सक्षम हो और आगामी समाज की मॉग के अनुरूप शिक्षकों को तैयार कर सके। जिससे एक शिक्षक अपने कुशल सामाजिक नेतृत्व के द्वारा समाज मे अपनी उपस्थिति दर्ज करा सके।

राष्ट्र की आकांक्षा और जरूरतें, सांस्कृतिक और सामाजिक बदलाव हमारे पाठ्यक्रम के अन्तर्गत निहित होनें चाहिए। शिक्षक को आद्यतन नवाचारों की खोज करके बदलते सामाजिक परिदृश्य के अनुरूप पाठचर्या विकास मे योगदान करना चाहिए। कहा जा सकता है कि शिक्षक शिक्षा की पाठ्यचर्या व्यापक और विस्तृत होने के साथ उसका स्वरूप चयनात्मक भी होनी चाहिए, यही नही बल्कि इसे आसानी से क्रियान्वित भी किया जा सके।

शिक्षा वह प्रक्रिया है, जो मनुष्य को एक संस्कारवान और चेतनशील प्राणी बनाती है। शिक्षा राष्ट्र की बुनियाद है जिस पर संपूर्ण राष्ट्र और युवाओं का भविष्य निर्भर करता है। राष्ट्र की प्रगति में शिक्षा की भागीदारी सर्वविदित है।

किसी भी देश काल की शिक्षा पद्धति मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान शिक्षक का है। शिक्षा व्यवस्था चाहे जैसी भी हो शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि होती है अर्थात् समस्त शिक्षा व्यवस्था उसके चहूँ और विचरण करती है। अध्यापक शैक्षिक प्रक्रिया का वह पावन अंग है, जिसके सतत् प्रयास से ही विद्यार्थी अज्ञान व अन्धकार की तामसिक शक्तियों से संधर्ष कर ज्ञान से प्रकाशित होकर जावन में आगे बढते हैं।

अतः कहा जा सकता है व्यक्ति को पशुत्व से मनुष्यत्व और मनुष्यत्व से देवत्व की ओर ले जाने मे शिक्षक की भूमिका सर्वोपरि है क्योंकि अध्यापक ही विषय सामग्री का प्रस्तुतीकरण करके शिक्षा प्रक्रिया को लक्ष्य प्रदान करता है।

आज समाज मे हमें नित नए–नए परिवर्तन नजर आ रहे है। जिसका प्रभाव व्यक्ति, समुदाय, विचार, मूल्यों आदि पर पड़ रहा है। तो भला शिक्षा इन परिवर्तनों से अछूती कैसे रह सकती है। अतः शिक्षक को इन परिवर्तनों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। ओटावे के अनुसार ''शिक्षा समाज का अनुसरण करती है। समाज में जैसे–जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिवर्तन होंगे वैसे–वैसे शिक्षा के उद्दश्यों में भी परिवर्तन होते रहेंगे।'' पूर्व राष्ट्रपति ए•पी•जे• कलाम ने वर्तमान भारतीय दशा से परिचित करते हुए कहा है कि "हमारा देश चुनौतियों से गुजर रहा है जिसमें मुख्यतः 260 मिलियन (26 करोड़) लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं, उनके जीवन स्तर को सुधारना है। मकान, भोजन, स्वास्थ्य, रक्षा, शिक्षा, रोजगार और अन्ततः एक अच्छा जीवन व्यतीत करना उनकी मुख्य आवश्यकता है। हमारी सकल घरेलू उत्पाद का स्तर 6ः है पर विशेषज्ञों का मानना है कि सकल घरेलू उत्पाद का स्तर कम से कम 10ः होना चाहिए और वह भी तकरीबन 10 साल तक तभी हम जीवन रेखा से नाचे जीवन यापन करने वालों का स्तर सुधार सकते है।'' शिक्षा का हमारी आर्थिक स्थिति पर

सीधा प्रभाव पड़ता है और एक शिक्षक का यह प्रयास होना चाहिए कि गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले बच्चों को शिक्षित किया जाए। जिससे देश की आर्थिक स्थिति में सुधार हो और शिक्षा के मूल उदद्देश्यों की प्राप्ति हों।

शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम व वातावरण शिक्षण प्रक्रिया के इन चार आधार स्तम्भों मे से पाठ्यक्रम एक महत्वपूर्ण घटक है। हमारी पाठ्यचर्या सिर्फ विद्यालय तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि विद्यालय से बाहर भी चलती है जिनका आयोजन शिक्षा के उद्देश्यों एंव समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया जाता है।

जाकिर हुसैन का मत है कि ''शिक्षक –शिक्षा की पाठ्यचर्या इस प्रकार होनी चाहिए कि वह आत्मा में स्व–तत्व और सत्यता, रूप और सौन्दर्य, नेकी एंव पवित्रता, न्याय और स्वतन्त्रता जैसे मूल्यों का विकास करे।'' इस कथन से स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यचर्या में मूल्यवादी दृष्टिकोण, भारतीय शिक्षा दर्शन और मानवाय मूल्यों और विचारों को समाहित किया जाए।

कोठरी आयोग (1966) की रिर्पोट मे स्पष्ट रूप से वर्णित है कि '' शिक्षक शिक्षा का सारतत्व उसके कार्यक्रम की गुणवत्ता है। इसके अभाव मे शिक्षक शिक्षा न केवल वित्तीय बर्बादी है, अपितु यह समस्त शैक्षिक स्तरों में गिरावट का स्त्रोत बन जाता है। अतः शिक्षक शिक्षा मे गुणात्मक संवर्धन सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम है।'' इस तथ्य से स्पष्ट है कि गुणता उसके पाठ्यक्रम में निहित होती है। और पाठ्यक्रम को समय–समय पर व बदलते सामाजिक परिदृश्य के अनुरूप परिर्वतन करना चाहिए।

पिछले कुछ वर्षो में राष्ट्रीय एंव अंतराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले शैक्षिक, राजनैतिक, सामाजिक एंव आर्थिक दृष्टि से घटित होने वाले तीव्रगामी परिवर्तनों ने नई चुनौतियाँ प्रस्तुत की है, जिससे शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यचर्या के पुर्ननिर्माण की आवश्यकता है।

राममूर्ति समीक्षा समिति (1990) के अनुसार "पाठ्यक्रम में प्रजातन्त्र, धर्म–निरपेक्षता, समाजवाद, वैज्ञानिक –स्वभाव, ईमानदारी, साहस, निष्ठा, विभिन्न भाषाओं के प्रति सम्मान आदि मूल्यों को शामिल किया जाए। अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा ऐसे समर्थ शिक्षक तैयार किए जाएँ जो विद्यार्थियों में इन भावनाओं को विकसित करने में सक्षम हो और राष्ट्रीय सुदृढ़ता के लिए अध्यापक–शिक्षा पाठ्यक्रम में विविद्यता का होना आवश्यक है।

आज अधिकांश नागरिक अपने अधिकारों का तो ज्ञान रखते हैं परन्तु अपने कर्त्तव्यों के प्रति उदासीन रहते हैं। शिक्षक में स्वंय अपने आचरण के माध्यम से विद्यार्थियों में कर्त्तव्य बोध की क्षमता को विकसित करने की क्षमता हो।

आज शिक्षा मे नवीन शैक्षिक पद्धतियों का जन्म हो रहा है। विज्ञान का प्रभाव समाज के साथ–साथ शिक्षा मे भी पड़ता रहा है। अतः आवश्यक है सूचना क्रान्ति के इस दौर मे नवीन सूचनाओं का ज्ञान शिक्षकों को कराया जाए।

विज्ञान के इस दौर में कम्प्यूटर का आविष्कार एक महत्वपूर्ण देन है। शिक्षक– प्रशिक्षण कार्यक्रम में यदि कम्प्यूटर शिक्षा को शामिल नहीं किया गया तो यह शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ अन्याय होगा।

आज यूनेस्को, एमनेस्टी इंटरनेशनल आदि संस्थाए मानवाधिकारों और इनके हनन को रोकने के लिए कार्य कर रही हैं। शिक्षक– प्रशिक्षण कार्यक्रम में मानवाधिकार से सम्बन्धित विषयों को सम्मिलित किया जाए। निर्धनता बेरोजगारी, जनसंख्या विस्फोट कम उत्पादन आदि आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए आर्थिक नियोजन एंव मानव शक्ति नियोजन आवश्यक है। शिक्षा का व्यावसायीकरण करके इस समस्या को दूर किया जा सकता है।

अस्तित्ववाद, यथार्थवाद, वास्तविकतावाद आदि समाज की आवश्यकताओं के आधार पर अपनी उपयोगिता सिद्ध कर रहे हैं। इन दर्शनों मे मनुष्य की स्वतंत्रता, अधिकारों, समानता को महत्व और वर्ग–विभेद, अत्याचार, शोषण आदि विरोध को स्थान मिला है। इस प्रकार के दर्शनों को शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए।

बदलते सामाजिक परिदृश्य मे निर्देशन एंव परामर्श संबंधी तथ्यों का समावेश शिक्षक– प्रशिक्षण कार्यक्रम मे हो जिससे शिक्षक अपने छात्रों को सही निर्देशन व परामर्श प्रदान कर सके।

सारांश मे वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के निम्न उद्देश्य होने चाहिए–

1. प्रशिक्षणार्थियों को नवीन शिक्षण तकनीकों की जानकारी प्रदान करना।
2. प्रशिक्षणार्थियों मे रूचि, सृजनात्मकता, अभिप्ररणा को बढ़ावा देना।
3. नवीन अनुसन्धानों की जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को प्रदान करना।
4. पुराने ज्ञान एंव विश्वासो का मूल्यांकन करना।
5. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समझ को सुदृढ़ करना।
6. शिक्षण कार्य के प्रति सन्तुष्टि रखने के गुण व उन्नति के अवसरों का विकास करना।
7. शिक्षा में नवाचारों की जानकारी प्रदान करना।
8. पाठ्यसहगामी क्रियाओं को सम्मिलित करना।

पूरी मानव सभ्यता के अन्दर इस बात की होड़ है कि वह अच्छा कार्य करें और शिक्षक –प्रशिक्षण कार्यक्रम में समय–समय पर दिए गए सुझावों के अनुसार बदलाव करें। आज व्यक्ति जब अन्य व्यवसायों मे सफल नहीं होता है तो वह अतिंम विकल्प के रूप मे शिक्षण व्यवसाय को अपना रहा है अर्थात विकल्प के रूप में इस व्यवसाय के प्रति वह कम उत्साहित और आर्थिक रूप से भी चिंतित रहता है। जबकि शिक्षण व्यवसाय को सर्वोपरि होना चाहिए और देश के सर्वश्रेष्ठ और योग्य व्यक्तियों का इसमें समावेश होना चाहिए।

राष्ट्रीय परिदृश्य को ध्यान मे रखते हुए शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में निम्न परिवर्तन किए जाने चाहिए वे इस प्रकार से हैं–

- प्रशिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सूक्ष्म शिक्षण एंव अनुकरणीय शिक्षण को अधिक महत्व दिया जाए।
- पाठ्यक्रम को रोजगारोन्मुख बनाया जाए।
- प्रशिक्षणर्थियों के लिए गोष्ठियों, सेमिनारों, वर्कशाप आदि का आयोजन किया जाए जिससे नवीन अनुसन्धानों की जानकारी प्राप्त हो सके।
- अध्यापक से अपेक्षित कार्य कुशलता के अनुरूप अध्यापक शिक्षा का कार्यक्रम व योजना बनाई जाए।
- राष्ट्रीय स्तर पर एकीकृत पाठ्यक्रम तैयार किया जाए।
- कम से कम छः महीने की इन्टर्नशिप के माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को वास्तविक रूप से विद्यालय में काम करने का अनुभव प्रदान कराया जाए।
- पाठ्यक्रम के माध्यम से लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास किया जाए।
- शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में सिद्धान्त और अभ्यास के बीच सामंजस्य बनाया जाए।
- दृश्य– श्रव्य उपकरणों का यथा संभव उपयोग किया जाए जिससे छात्रों में विषय–वस्तु के प्रति रूचि उत्पन्न हो सके और भविष्य में इनका प्रयोग कर सकें।
- पाठ्यक्रम विकास, संचालन एंव मूल्यांकन की क्षमता में वृद्धि करने के लिए 'पाठ्यचर्या निर्माण व विकास' तथा विद्यालय प्रबन्ध' को पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से रखा जाए।
- शिक्षक– प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में शैक्षिक और व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा को शामिल किया जाए।
- शिक्षक– प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में समय और संसाधनों के अनुरूप लचीलापन हो।
- पाठ्यक्रम मे ICT के प्रयोग को बढावा मिलना चाहिए।
- राष्ट्रीय एकता, सामाजिक एकता और अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध को बढ़ावा दिया जाए। उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम में आवश्यक बदलाव होने से कुशल शिक्षकों का निर्माण संभव है, जिससे कक्षाओं में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को नवीन जीवन मिल सकेगा और भारत के भाग्य का निर्माण कक्षाओं में तभी संभव है।